उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	हाईस्कूल परीक्षा (उत्तराखण्ड)	'अ' 10 पन्ने

प्रश्नोत्तर सं०- 01

(क)

हमारे देश ने आलोक व अन्धकार के अनेक युग पार किए है, परन्तु अपने सांस्कृतिक उत्तराधिकार के प्रति वह एकान्त सावधान रहा है। उसमें अनेक विचारधाराएँ समाहित हो गई, अनेक मान्यताओं ने स्थान पाया, पर उसका व्यक्तित्व सर्वभौम होकर भी उसी का रहा। उसके अंतर्गत आलोक ने उसकी वाणी के हर स्वर को उसी प्रकार उद्भासित कर दिया जैसे: आलोक हर तरंग पर प्रतिबिंब की तरह होकर उसे आलोक की रेखा बनाते है। एक ही उत्स से जल पाने वाली नदियों के समान भारतीय भाषाओं के वाह्य और आंतरिक रूपों में उत्सगत विशेषताओं का सीमित हो जाना स्वभाविक था। अतः इस प्रकार हमारा देश प्रमुख रूप से आलोक व अन्धकार के प्रति सावधान रहा है।

(ख)

राष्ट्र की दो विशेषताएँ :- राष्ट्र की अनिवार्य विशेषताओं में दो हमारे पास है:-

भौगोलिक अखण्डता और सांस्कृतिक एकता।
परन्तु अब तक हम उस वाणी को प्राप्त नहीं कर सकते है जिसमें एक स्वतंत्र राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के निकट अपना परिचय देता है। जहाँ तक बहुभाषा- भाषी होने का प्रश्न है, ऐसे देशों की संख्या कम नहीं है। जिनके भिन्न भागों में भिन्न भाषाओं की स्थिति है। परन्तु उनकी अविच्छिन्न स्वतंत्रता की परम्परा ने उन्हें सम - विषम स्वरों से एक राग रच लेने की क्षमता दी है। तथा यह हमें अद्यतन अप्राप्त है

(ग)

"भौगोलिक एकता और सांस्कृतिक एकता"

(घ)

उद्गम स्थल

(ङ.)

परतन्त्रता

प्रश्नोत्तर सं०- 04

(क)

क्या जीवन में स्वास्थ्य सबसे बड़ी पूँजी है?

(ख)

जैसे ही हम घर से बाहर निकले और बारिश होने लगी।

(ग)

एकटक

(घ)

अन्यथा

प्रश्नोत्तर सं०-05

(क)

माँ खीर बना रही है।

(ख)

अकर्मक क्रिया

(ग)

कर्तृवाच्य

(घ)

उससे चुपचाप नहीं बैठा जाता ।

प्रश्नोत्तर सं०- 06

(क)

~~चंद्रमा~~ सिंह।

(ख)

बादल

प्रश्नोत्तर सं०- 07

(i)

(क)

कवि => जयशंकर प्रसाद

कविता => आत्मकथ्य

(ग)

यहाँ आत्मकथ्य कविता में कवि जयशंकर प्रसाद जी दुर्बलता से यह कहना चाहते हैं कि वह अपने जीवन में घटित दुःखों, गलतियों, कमियों आदि से बहुत निराश हो चुके हैं। कवि अपने जीवन में घटित दुःखों और गलतियों को किसी को दिखाना नहीं चाहते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि यदि लोग उनकी कमियों और गलतियों को जानेंगे तो उनका मजाक उड़ाएंगे तथा कवि का मानना है कि इस संसार में उससे भी अधिक योग्य लोग हैं जिनको अपनी आत्मकथा लिखनी चाहिए कवि स्वयं को खाली गागर के समान मानते हैं अर्थात ऐसा मन जो भावों और विचारों से बिल्कुल खाली हो अर्थात कवि का दुर्बलता से आशय अपने जीवन में घटित गलतियों तथा कमियों से है। अतः ऐसी परिस्थितियों में कवि अपनी आत्मकथा कैसे कह सकता है।

प्रश्नोत्तर सं०- 08

(क)

गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान इसलिए कहा गया है, क्योंकि उद्धव श्री कृष्ण के पास रहते हुए भी ~~प्रेम~~ प्रेम से अनासक्त है और न ही प्रेम रूपी धागों से बँधे हैं। तथा न ही उद्धव के मन में प्रेम की कोई भावना है।

गोपियाँ उद्धव को कमल के उस पत्ते की तरह बताती है जिसपर पानी की एक बूँद भी नहीं ठहरती है तथा उस तेलयुक्त चिकनी गगरि के समान बताती है जिसमें पानी की एक बूँद भी नहीं समाती है. अतः गोपियाँ उद्धव को प्रेम से वंचित बताती है। अर्थात गोपियाँ व्यंग्यस्वरूप उद्धव का उपहास कर रही है।

(ग)

कवि 'नागार्जुन' के मन पर बच्चे की दंतुरित मुसकान का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। कवि के अनुसार एक बच्चे की दंतुरित मुसकान 'जीवन-दायिनी' होती है जो मरने वाले

मनुष्य अर्थात मृतक में भी जान डाल देती है। एक छोटे बच्चे की मुसकान बहुत ही प्रभावशाली होती है। एक बच्चे की दंतुरित मुसकान पत्थर रूपी हृदय को भी पिघलाकर द्रव में परिवर्तित कर देती है। अतः दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

प्रश्नोत्तर सं०- 09

(क)

कवि 'नागार्जुन' के अनुसार फसल निम्न-लिखित तत्वों का परिणाम है :-

⇒ ढेर सारी नदियों के पानी का जादू

⇒ लाखों-करोड़ो किसानों के हाथों की मेहनत का फल।

⇒ हज़ारों - हज़ारों मिट्टी का गुणधर्म (विशेषता)

⇒ सूर्य की किरणों का रूपांतर (मिश्रण)

⇒ हवा की थिरकन (कंपन)

(ख)

उत्साह कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है :-

⇒ जल बरसाने वाली शक्ति के रूप में

⇒ उत्साह और संघर्ष की भावना रखने ~~वाली~~ वाले कवि के रूप में।

⇒ धरती पर पीड़ित मनुष्यों का दुःख हरने वाली तथा सुख प्रदान करने वाली शक्ति के रूप में।

प्रश्नोत्तर सं० - 10

(ii)

(क)

लेखिका 'मन्नू भण्डारी' जी कहती है कि "घर की दीवारें पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थी" इस कथन का आशय यह है कि उस समय घर की लड़कियों पर मोहल्ले के किसी भी घर जाने में कोई पाबन्दी नहीं थी। बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा बन जाते थे। और

लेखिका द्वारा कहा गया यह कथन सभी में प्रेम भाव, समानता आदि को दर्शाता है। लेखिका भी अपने मोहल्ले में आ-जा सकती थीं उन्हें भी मोहल्ले में आने-जाने से कोई पाबन्दी नहीं थी। अतः इसी कारण लेखिका ने यह कहा है कि "घर की दीवारें पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थी"।

(ख)

लेखिका के अनुसार 'फ्लैट संस्कृति' में हम असुरक्षित, संकुचित और असहाय इसलिए है, क्योंकि लेखिका को बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस हुआ कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। इसी कारण लेखिका ने ऐसा कहा कि "फ़्लैट संस्कृति में हम असुरक्षित, संकुचित और असहाय है"।

प्रश्नोत्तर सं०- 11

~~(क)~~ (ख)

सभ्यता => लेखक के अनुसार सभ्यता संस्कृति का ही परिणाम है। जब किसी मनुष्य को कोई वस्तु अपने पूर्वजों से अनायास ही प्राप्त हो जाती है, तथा जिसका आविष्कार उसके पूर्वजों ने किया था तब वह उसकी सभ्यता कहलाती है।

उदाहरण :- हमारे खाने-पीने, ओढ़ने-पहनने के तरीके, हमारे आवागमन के साधन तथा हमारे आपस में कट-मरने के तरीके आदि

संस्कृति :-
- किसी व्यक्ति के द्वारा उसके बुद्धि या विवेक से की गई किसी नए तथ्य की खोज संस्कृति है।
- किसी व्यक्ति के द्वारा मानवता के लिए अपना सब कुछ त्याग करा देने की भावना संस्कृति है।
- पेट भरा होने तथा तन ढका होने पर भी निठल्ला न बैठने वाले मनीषियों द्वारा की गई ग्रह नक्षत्रों की खोज संस्कृति है।

(ग)

लेखिका मन्नू भण्डारी के पिताजी ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर इसलिए कहकर पुकारा है, क्योंकि लेखिका के पिताजी का मानना है कि "रसोईघर के काम में लग जाने पर लड़कियाँ अपनी प्रतिभा तथा क्षमता को आग की भट्टी में जलाकर नष्ट कर देती है" यहाँ तक की वह अपनी प्रतिभा का सही जगह उपयोग भी नहीं कर पाती है। प्रतिभा तथा क्षमता का आग की भट्टी में झोंकने वाली जगह में होने के कारण लेखिका के पिताजी ने रसोईघर को 'भटियारखाना' कहकर संबोधित किया है।

प्रश्नोत्तर सं०- 12

(क)

मनुष्य की आग की खोज को सबसे बड़ा तथा सबसे महत्वपूर्ण माना। आदिमानव को जब प्रकाश करने, जंगली जानवरों से बचने, सर्दी से बचने तथा माँस भूनकर पकाने की आवश्यकता हुई होगी तो आग का आविष्कार किया

किया गया होगा। आग मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता को पूरा करती है। अतः भोजन पकाना, प्रकाश करना, जंगली जानवरों से बचना तथा मौसम की असहनीय पीड़ा से बचना ही मुख्य प्रेरणा के स्त्रोत रहे होंगे।

(ख)

"नेताजी का चश्मा" पाठ "स्वयं प्रकाश" जी द्वारा रचित है। यह पाठ हमें यह संदेश देता है कि "देशभक्ति केवल सीमा पर लड़ने में नहीं बल्कि हमारे दैनिक-कार्यों, ईमानदारी और हर छोटे-छोटे प्रयासों से देश के प्रति प्रेम जताने में है"। तथा यह कहानी हमें शहीदों का सम्मान और उनके द्वारा किए गए महान कार्यों को अपने जीवन में उतारने का भी संदेश देती है।

प्रश्नोत्तर सं०-13

(क)

गंतोक को मेहनतकश बादशाहो का शहर इसलिए कहा जाता है, क्योंकि गंतोक एक पहाड़ी स्थान है तथा वहाँ के लोगों का मेहनती होना स्वभाविक

है। वहाँ छोटे- छोटे, कच्चे - पक्के तथा संकरे रास्तों को बनाने में बहुत अधिक कठिन परिश्रम करना पड़ता है। वहाँ छोटे - छोटे हर आवश्यक वस्तु के लिए बहुत दूर - दूर तक जाना पड़ता है। तथा गंतोक में बच्चे विद्यालय जाने के लिए लगभग दो मील का रास्ता पैदल ही तय करते हैं। गंतोक का इतिहास और नगर की एक - एक वस्तु वहाँ रहने वाले लोगों के कठिन परिश्रम की गवाही देता है। इसी कारण गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा जाता है।

(ख)

भोलानाथ और उसके साथियों की खेल और खेलने की ~~साम~~ सामग्री जैसे: घरौंदा बनाना, खेल - खेल में खेतीबाड़ी करना, गुड्डे - गुड़ियों के विवाह रचाना आदि सभी में ग्रामीण परिवेश की झलक दिखाई देती है। जबकि हमारी खेल सामग्री जैसे: वीडियोगेम्स, लूडो, चेस आदि सभी ~~में~~ वैज्ञानिकीकरण तथा ग्रामीण परिवेश की झलक दिखाई देती है। अतः भोलानाथ और उसके साथियों की खेल सामग्री में वैज्ञानिकी- -करण और आधुनिकीकरण का अभाव

है तथा हमारे खेलों में वैज्ञानिक प्रगति स्पष्ट दिखाई देती है।

(ग)

लॉंग स्टोक से गुजरते हुए लेखिका 'मधु कांकरिया' जी की नजर एक कुटिया के अंदर घूमते हुए चक्र पर पड़ी तब लेखिका ने जितेन नार्गे से पूछा कि यह क्या है? तब जितेन नार्गे ने उन्हें यह बताया कि यह एक धर्म-चक्र यानि प्रेयर व्हील है, इसको घुमाने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। तब लेखिका सोचती है कि चाहे पहाड़ हो या मैदान सभी लोगों की मानासिकताएँ एक जैसी है। सभी लोगों में विश्वास, अंधविश्वास, पाप, पुण्य, तथा आस्थाएँ आदि की अवधारणाएँ एक जैसी है। शायद लोग अधिक सुख पाने के लिए सदियों से इनका पालन करते आए हैं।

प्रश्नोत्तर सं०- 14

(क)

देवभूमिः उत्तराखण्डे उत्तरस्यां दिशि श्रीबदरी-
-नाथधाम भगवतः श्रीविष्णोः आराध्यस्थलं
वर्तते ।

(ख)

मन्दिरम् अलकनन्दानद्याः तटे स्थितमास्ति।

(घ)

अत्र मन्दिरं (श्रीबदरीनाथ) पुरतः स्थिते
तप्तकुण्डे जनाः स्नानं कुर्वन्ति ।

प्रश्नोत्तर सं०- 15

(क)

क्षणत्यागे विद्यां न सिध्यति ।

(ख)

कणत्यागे कुतः धनम् ।

प्रश्नोत्तर सं० - 16

(क)

हिमालयस्य ~~अ~~ उपत्यकायां लीलम् नामकः ग्रामः अस्ति ।

(ख)

~~श्वेता भारतीय प्रशासनिक~~

श्वेता दूरदर्शने संस्कृतप्रवाचिका रूपेण कार्यं कुर्वंती अस्ति ।

(ग)

पिप्पलः अहर्निशं प्राणवायुः (ऑक्सीजन) ~~प्रदद~~ प्रददामि । कार्बन- डाई - ऑक्साइडं च ग्रहणामि ।

प्रश्नोत्तर सं० - 17

(क) हिमालयात

(ख) प्रेरयामि

(ग) हृदः

(घ) नद्याः

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	हाईस्कूल परीक्षा 'ब' (उत्तराखण्ड) 06 पन्ने

प्रश्नोत्तर सं०- 18

(क)

नायिका

हरेऽव

(ख)

पो + अनम्

इति + आदयः

(घ)

उत

अनु

(ङ)

ग्रामस्य

पादेन

प्रश्नोत्तर सं०-19

~~गच्छथः →~~

~~१४ →~~

(क) यूवां विद्यालयं गच्छथः

(ग) गंगा हिमालयात् निस्सरति ।

प्रश्नोत्तर सं०- 03

शिकायती पत्र

सेवा में,

विद्युत विभाग के आधिशासी
जसपुर (ऊधम सिंह नगर)
उत्तराखण्ड

विषय → तूफान व आँधी के कारण विद्युत व्यवस्था के बिल्कुल बाधित होने पर।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं जसपुर क्षेत्र की निवासी हूँ। मेरे क्षेत्र में लगभग पाँच दिन से विद्युत बिल्कुल बाधित हो चुकी है। इसका कारण अभी पाँच - छः दिन पहले आए हुए तूफान के कारण हुई है। यह तुफान इतना तेज था कि इसने खंभे के काफी सारे तारों को क्षतिग्रस्त कर दिया। कई खंभे टूट कर नीचे गिर गए। जिससे विद्युत बाधित हो गई।

कई दिनों से विद्युत न होने के कारण हमें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कई गृहस्थ कार्यों को

करने में अनेको परेशानियाँ आ रही है। घर के कार्य जैसे साफ-सफाई आदि में बाधा आ रही है। पूरे दिन घरों में अंधकार रहता है। तथा अब हमारी बोर्ड की परीक्षाएँ भी नजदीक आ रही है। और विद्युत न होने के कारण हम सही से पढ़ाई भी नहीं कर पा रहे है। हमारी परीक्षाएँ भी नजदीक है और विद्युत का न होना इनमें बाधा डाल रहा है।

इसके अतिरिक्त रात को घरों में अँधेरा रहता है और यह अँधेरा मच्छरों के लिए उपयुक्त है। मच्छरों के दवारा काटे जाने से मनुष्य में विभिन्न रोग पनपते है। मच्छरों ने हमारे क्षेत्र में भी डेंगू, मलेरिया आदि भयानक रोगों का भय बना रखा है। अतः मेरा पढ़ाई का समय पूरा बदल चुका है रात के समय में पढ़ाई विद्युत की वजह से नहीं हो पा रही है।

अतः मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इस विषय को गंभीरता से लेते हुए उपयुक्त कदम उठाए। आपकी अति कृपा होगी। मैं आपकी सदैव आभारी रहूँगी।

धन्यवाद

क, ख, ग

प्रश्नोत्तर सं० - 02

शिक्षा एवं सदाचार

* प्रस्तावना
* जीवन में शिक्षा का महत्व
* सदाचार का अर्थ, जीवन में प्रयोग
* जन - जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार
* सदाचरण में शिक्षा की भूमिका
* उपसंहार

प्रस्तावना :- शिक्षा मानव जीवन में अति आवश्यक है। शिक्षा अति आवश्यक है। शिक्षा आज के युग की एक बड़ी आवश्यकता बन गई है। शिक्षा के बिना आधुनिक युग की कल्पना भी असम्भव है।

सदाचरण का अर्थ है - अच्छा आचरण अर्थात् अच्छा व्यवहार। अच्छा व्यवहार सभी को अच्छा भी लगता है। यह दूसरे व्यक्ति या सामने व्यक्ति जो खड़ा है उसे प्रभावी करने का एक अच्छा तरीका है। सदाचरण सदैव मनुष्यों को प्रभावित करता है। सभी व्यक्ति सदाचरण को पसंद किया करते

है। तथा शिक्षा एवं सदाचरण के बीच गहरा संबंध होता है।

जीवन में शिक्षा का महत्व :-

मनुष्य जीवन में शिक्षा अति-आवश्यक है। जीवन में शिक्षा ही मनुष्य जीवन को सँवारती है। एक व्यक्ति को समाज में उच्च प्रतिष्ठा तथा सम्मान भी शिक्षा ही प्रदान कराती है।

व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा मनुष्य को धन, शिक्षा, ज्ञान आदि सभी से परिपूर्ण कराती है। शिक्षा इतनी आवश्यक बन गई है कि इसके बिगैर आज के आधुनिक युग की कल्पना भी असम्भव है। अतः शिक्षा मानव जीवन में शिक्षा अति आवश्यक है।

शिक्षा है जीवन का आधार, इसको तुम करो स्वीकार

सदाचार का अर्थ :-

सदाचार का अर्थ होता है कि-सदा आचरण करना अर्थात ऐसा आचरण जो सभी को पसंद आये सभी व्यक्तियों को अच्छे से बोलने वाले सदा अच्छा मित्रवत व्यवहार रखने वाले व्यक्ति ही अच्छे लगते है।

यदि व्यक्ति अच्छे से व्यवहार करता है तो इसका सीधा प्रभाव सामने खड़े व्यक्ति पर पड़ता है। यदि व्यक्ति की बोलचाल तथा व्यवहार में मिठास हो तो व्यक्ति सदैव अच्छा माना जाता है।

सदाचार का जीवन में प्रयोग :-

सदाचार भी जीवन में शिक्षा की तरह ही महत्व रखता है। इसका प्रयोग मनुष्य जीवन को उच्च स्तर तक पहुचाने के लिए तथा सामाजिक प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान आदि के लिए होता है।

मनुष्य जीवन में सदाचार को अपनाना अति आवश्यक है। सदाचार से निहित व्यक्ति को अच्छा तथा सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। अतः यह सदाचार मानव

जीवन में अत्याधिक प्रयोग होता है।

रखो व्यवहार में सदाचार, यह तुम्हें दिलाएगा सम्मान।

जन-जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार :-

भ्रष्टाचार का अर्थ है- भ्रष्ट आचरण अर्थात् ऐसा आचरण जो समाज, व्यक्ति या किसी को भी हानि पहुँचाये । भ्रष्टाचार कहलाता है।
भ्रष्टाचार को दो वर्गों में बाँटा गया है जो निम्नलिखित है:

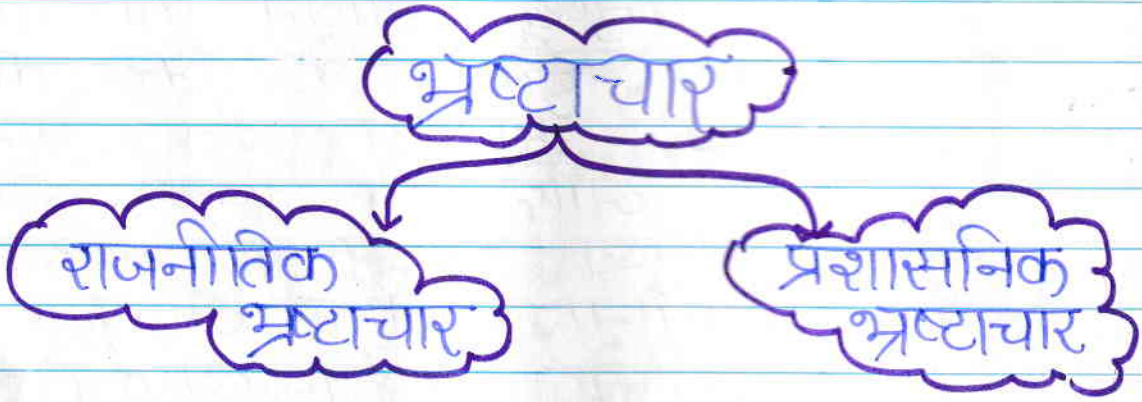

राजनीतिक भ्रष्टाचार वह भ्रष्टाचार जो राजनेता या चुनावी मैदान के

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)

हाईस्कूल परीक्षा (उत्तराखण्ड) 'ब'$_2$ 06 पन्ने

चुनाव जीतने के लिए करते है।
प्रशासनिक भ्रष्टाचार में नौकरियाँ आदि में घोटाला करने वाले संस्थान शामिल होते है।
अतः भारत जैसे विकासशील देश मे भ्रष्टाचार भरा पड़ा है।

भ्रष्टाचार को मिटाओं समृद्ध राष्ट्र बनाओं

सदाचरण में शिक्षा की भूमिका:

सदाचरण में शिक्षा अति महत्वपूर्ण भूमिका रखता है यदि व्यक्ति का आचरण सही है तो वह जल्द ही शिक्षा को ग्रहण कर जाता है।
इसके अलावा शिक्षा तथा सदाचरण से व्यक्ति का व्यक्तिव भी निखर कर आता है।

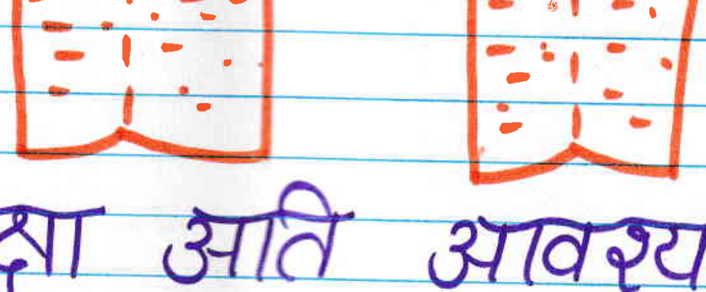

"शिक्षा अति आवश्यक है"

उपसंहार :- अतः उपर्युक्त विवरण के द्वारा स्पष्ट है कि सादा आचरण अर्थात सदाचार और शिक्षा मनुष्य जीवन के लिए दोनों ही अति आवश्यक है। दोनों के द्वारा व्यक्ति अपना व्यक्तित्व निर्माण तथा समाज में उच्च स्तर प्राप्त करता है।

अतः शिक्षा तथा सदाचार दोनों ही जीवन के लिए अति आवश्यक हैं।